International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.065
Vol.8 No.1 Sept – Oct 2020

'मधु कांकरिया के कथा साहित्य में पारिवारिक यथार्थ'

Khilare Sindhu Daji
Assistant Professor, Dept. Of Hindi
Uma Mahavidyalaya Pandharpur, Dist- Solapur, 413304(MS)
Email- khilaresindhu28@gmail.com

सारांश :

आज के युग में यांत्रिक प्रोद्योगीकी का विकास इतना बढ़ गया है कि मनुष्य जाति की सृजनात्मक शक्ति तकनीकी बोझ से दब चुकी है। आज के युवा वर्ग को विज्ञान ने काव्य और साहित्य कला को नित्सावहत्य किया हैए धन का एकत्रीकरणए सुख - सुविधाओं की बहुतायत व्यापार बन चुका है। मधु कांकरिया 20 वीं शताब्दी के मध्य से और इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दौर के समाज में फैली उँच - नीच की जड़ों पर भी निगाह डालती हैं और उनपर तीखा प्रहार करती है। लेखिका ऐसे लाग़ों की मानवसकता पर तीखा प्रहार करती है। मधु कांकरिया रचना संसार का फलक जितना व्यापक हैए ऐसा हिन्दी में कम ही रचनाकाऱों में दिखता है।

मूलशब्द - मधु कांकरिया, पारिवारिक यथार्थ

प्रस्तावना -

परिवार हमारे सामाजिक जीवन का मूलाधार है। क्योंकि परिवार ही हमंे संरक्षण प्रदान करता है, हमारे भीतर मानवीय मूल्यों का समावेश करता है। परिवार एक व्यक्ति के लिए उसकी प्रथम पाठशाला है जहाँ से वह अच्छे संस्कार ग्रहण करता है और उनका प्रयोग वह समाज की भलाई के कार्यों में करता है। परिवार व्यक्ति को संघर्ष करना सिखाता है, कठिनाईयों से जूझना सिखाता है और परिवार और समाज के बीच सामंजस्य रखना सिखाता है। इस प्रकार किसी भी समाज में परिवार अपना विशिष्ट महत्व रखता है। परिवार के बिना समाज की कल्पना भी सर्वथा असम्भव है। मनुष्य की आरम्भिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले संगठन एवं संस्थाओं में परिवार का स्थान प्रथम एवं प्रमुख है क्योंकि परिवार आदर्शों का पोषण-केन्द्र है। यह आदर्श सदस्यों के आचरणों में परिलिक्षित होते हैं। इस प्रकार आचरण के गुण-अवगुण जिन सामाजिक स्थितियों पर निर्भर करते हैं उनमें सर्वाधिक प्रभावकारी स्थिति परिवार की है। वस्तुतः मानव सर्वप्रथम अपने परिवार में सीखता है।

परिवार समाज की एक महत्वपूर्ण संस्था है। परिवार में दो विषम लिंगी व्यक्ति पति -पत्नी के रूप में रहते हैं और यौन संबंध रखते हैं। उनकी अपने अथवा गोद लिए बच्चे होते हैं। इन बच्चों के परवरिश की उचित व्यवस्था होती है। इसलिए दुनिया के अनेक संस्कृति में परिवार संस्था ने अपना अलग स्थान बनाया है। परिवार में पति-पत्नी, माता- पिता, पुत्र -पुत्री, भाई -बहन का संबंध माधुर्यपूर्ण होता है। ''परिवार मानव जीवन की आधारशिला है। सुबह घर से निकला हुआ व्यक्ति दिन भर कार्यरत क्लान्त शिथिल होकर संध्या समय जब घर लैटता है तो उसे अपने परिवार में सुख -शांति का आभास मिलता है। पारिवारिक व्यक्तियों के पारस्परिक माधुर्यपूर्ण व्यवहार पारिवारिक संबंधों को एवं सौहार्दपूर्ण सुदृढ एवं सौहार्दपूर्ण

बनाता है।"[1] प्रत्येक व्यक्ति जीवन भर किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है। परिवार के सदस्य आपस में संतान प्राप्ति, वात्सल्य, प्रेम और श्रद्धा आदि भावनाओं से बंधे रहते हैं।

प्राचीन युग में संयुक्त परिवार सदस्यों के कर्तव्य निर्धारित थे। जिसके कारण गृह कलह की कमी थी। डॉ. शशि जेकब के अनुसार "'प्राचीन युगीन परिवार का स्वरूप अत्यंत सहज और सरल था। उस समय परिवार प्रायः पितृ प्रधान अथवा माँ प्रधान होते थे। पितृ प्रधान परिवार में घर का मुखिय पिता होता था और मातृ प्रधान परिवार में घर की मुखिया माता होती थी। परिवार के सभी सदस्य मिल जुलकर रहते थे और पैतृक कार्यों में हाथ बंटाते थे।"[2] आज का समय बदल गया है। बदलते समय के साथ मनुष्य के विचार भी बदल गए है। परिणाम स्वरूप परिवार के सदस्य परिवार के हित में कार्य ना करके निजी हित को महत्व देते है। परिणाम स्वरूप परिवार में टकराव उत्पन्न होता है और पारिवारिक विघटन हो जाता है। डॉ. मंजू शर्मा के शब्दों में "आधुनिक युग में समाज की प्रमुख इकाइयों में संतुलर्न तथा अनुकूलन का अभाव होने के कारण तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे है। इन परिवर्तनों के कारण संयुक्त परिवार के मूल रूप में परिवर्तन अनिवार्य है। आधुनिक सभ्यता के परिणाम स्वरूप आदशोंर्, मूल्यों, भावनाओं और विचारों आदि में द्रुत गति से परिवर्तन हो रहा है अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक सभ्यता का एक अनिवार्य पारिवारिक विघटन है जिसे रोका नहीं जा सकता।"[3]

मधु कांकरिया के उपन्यासों में पारिवारिक जीवन तथा उनकी समस्याओं का चित्रण हुआ है। मधु कांकरिया के कथा साहित्य में उच्च वर्गीय, मध्यमवर्गीय तथा निम्न वर्गीय परिवार का चित्रण मिलता है। आधुनिक युग की महिला लेखिकाओं ने अपनी कहानी साहित्य में पारिवारिक जीवन एवं पारिवारिक संबंधों के बदलते रूप को चित्रित किया है। जिनमें मधु कांकरिया का कथा साहित्य अपना विशिष्ट स्थान रखता हैं। उन्होंने पारिवारिक संबंधों में आए परिवर्तनों को गहराई से देखा, उसकी पड़ताल की और अपनी कथा साहित्य के माध्यम से उन्हें अभिव्यक्त किया। आज की पारिवारिक व्यवस्था में पिता -पुत्र, पिता- पुत्री, माता -पुत्र, माता- पुत्री, पति-पत्नी, भाई -बहन, भाई -भाई संबंध और अन्य रिश्तेदारों के संभावित संबंधों में बदलाव दिखाई देता है। अर्थ केंद्रित प्रवृत्ति एवं वर्तनी मनुष्य ने मनुष्य को दबोच लिया है। आज पारिवारिक संबंध बिघडते हुए दिखाई देते हैं।

मधु कांकरिया के 'आर आसवो ना', 'बड़ा पोस्टर', 'दरअसल मम्मी',फैलाव, 'कीड़े' इन कहानियों में पारिवारिक जीवन का चित्रण हुआ है।

'बड़ा पोस्टर' कहानी भी पारिवारिक संबंधों को उजागर करती है। इस कहानी में माता- पिता, भाई- बहन, भाई -भाभी, चाचा- भतीजे के संबंध को चित्रित किया है। लेखिका ने यहाँ दीपू और शैलेन नामक दोनों भाइयों का जीवन चित्रित किया है। मनुष्य के जीवन में परिवार एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। साधारण-सा दीपू भाई शैलेन के नक्शे कदम पर चलकर बड़ा आदमी बनने की चाहत में कॉपी करता है। दोनों भाईयों के बीच की दरार का कारण भाभी को दिखाया है। इस नई औरत के कारण भाई को पागल खाने में डालनेवाला शैलेन दीपू की मृत्यु को भूल नहीं पाता है। मधु कांकरिया ने यहाँ पारिवारिक समस्याओं को उजागर किया हैं। एक व्यक्ति जो अपने परिवार के लिए समर्पित हो जाता है। कई बार उसे

अपनी इच्छा के विरुद्ध निर्णय लेने पड़ते हैं। इसी को 'बड़ा पोस्टर' कहानी के शैलेन के माध्यम से चित्रित किया है।

'दरअसल मम्मी' कहानी में लेखिका ने एक स्त्री का वर्णन किया है, जो अपने बेटे की खातिर पारिवारिक संबंधों में तनाव नहीं चाहती। वह पति को हमेशा खुश रखने का प्रयास करती है। सात वर्ष की बंटी को खून का कैंसर है इसी कारण उसे बचाने की हर नाकामयाब कोशिश माँ करती है। सत्रह वर्षीय कुलदीप के सामने भी वह अपने पति का ख्याल रखते हुए उनकी हर बात मानती हैं। ''इन दिनों मम्मी डैडी हौआ बन गए हैं मेरे लिए दोनों जब अकेले होते हैं कमरें में तो दशहत होती है। अंदर जाने में.....या तो झगडते मिलते है या फिर....।''[4] मां बंटी के इलाज के लिए किसी प्रकार की कटौती नहीं चाहती हैं। इसी कारण वह अपने पति को खुश रखना चाहती है। यहाँ मधु कांकरिया ने एक मां की कठोरता का चित्रण किया है। उसकी पीड़ा, दुख, दर्द को चित्रित किया है। यहाँ परिवार में माता - पुत्री आती कडवाहट कें साथ - साथ पति - पत्नी के संबंधो का चित्रण किया है। दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने का झूठा प्रयत्न यहाँ दिखाई देता है। उस रिश्ते मे प्रेम, अपनापन नहीं है।बेटा और बेटी और मां -बाप में भी रिश्तो में कहीं मधुरता दिखाई नहीं देती है। 'कीड़े' कहानी भी पारिवारिक संबंधों को चित्रित करती है। भरी दोपहरी के अँधेरे कहानी संग्रह की यह कहानी है। प्रोफेसर वर्मा के जीवन की कहानी है। कहानी का शीर्षक बड़ा ही प्रतीकात्मक है। जिन कीड़ों के कारण प्रोफेसर वर्मा को मर्सी किलिंग करना पड़ता है, उन्हीं कीड़ों के कारण उन्हें जीवनदान भी मिलता है। उनके दो पुत्र मयंक और मोहित विवाहित है। पत्नी उम्र के पड़ाव तक आते-आते उनका साथ नहीं देती और वर्मा अपने जीवन को निरर्थक मानते हैं। जब पिता वृध्द हो जाते हैं तो निश्चित ही वह पुत्र पर निर्भर होते हैं। परंतु स्वार्थ व्यक्ति को इतना अंधा बना देता है कि जिस पिता ने पुत्र का भविष्य बनाने के लिए रात दिन कड़ी मेहनत की होती है। खून का पसीना बहाया होता है उस पिता के प्रति पुत्र के मन में स्नेह होने के बजाय नफरत होती है। जिस पिता ने उन्हें जन्म दिया, मानव जीवन से परिचित कराया, उसी पिता के प्रति कृतज्ञ हो जाते हैं। ''परिवार की भावशुन्यता की बदबू और मनुष्यता उन को लगे कीड़े को''[5] उन्होंने बड़ी नाजदीकी सी महसूस किया है। लेखिका ने यहां पारिवारिक स्थिति का वर्णन किया है उसे हम समाज के हर घर में देख सकते हैं। 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में ऐसी मां का चित्रण किया है, जो अध्यात्म को मुक्ति का मार्ग कहती है। उसका कहना है कि उसकी जवान बेटियां भी इसी मार्ग को अपना ले ताकि उनके जीवन को एक नया मोड़ मिल सके। उसका ऐसा भी मानना है कि साध्वी बनने के कारण परिवार का मान -सम्मान बढ़ जाएगा और आर्थिक विपन्नता दूर हो जाएगी। इस उपन्यास में ऐसे परिवार का चित्रण किया है जिसका मुखिया और पुत्र ऋषि दोनों की मृत्यू के कारण पूरे परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ मां पर आती है। दो दो जवान बेटियाँ और घर में कोई भी पुरुष न होने के कारण परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ माँ पर आती है। समाज में बिना पुरुष वाले घर की स्थिति कुछ खास नहीं होती। शिकारी कुत्तों की तरह लोगों की नजर उस घर पर रहती है। इसी कारण बेचैनी के कारण मां साध्वी बन जाती है। वह अपनी दोनों बेटियों को सन्यास जीवन में दीक्षा देकर जीवन से थकी, हारी माँ

अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहती है। "कितनी वाहियात चीज है यह शादी। मैं नहीं चाहती कि तुम इसमें फँसं, मेरी ही तरह विधवा हो और तिल -तिलकर अपने बच्चों को मरते हुए देखो। संसार में रहने का मतलब ही है दुखों के दलदल में फँसना।"[6] इस प्रकार माँ डर और असुरक्षा के कारण अपनी बेटियों के साथ सन्यास लेना चाहती है। परिवार में माता-पिता अपने बेटों को पाल पोस कर बड़ा करते हैं और उम्मीद करते हैं कि वह उनकी वृद्धावस्था में सहारा बने। किंतु बेटे और बहूए भी आर्थिक व्यय के कारण उनको बोझ समझते हैं।

मधु कांकरिया के 'कीडे कहानी में चित्रित परिवारों के बेटे अपने मां बाप को वृध्दावस्था में आधार नहीं देते है। मोहित और मयंक दो बेटे है। प्रोफेसर वर्मा रिटायर हो गए है। उनके शरीर में कीड़े हो गए है। उनका बीमारी के कारण सारा बदन बदबू मारता है। शरीर के घाव पर बदबू और कीड़े की बीमारी के कारण पुत्र अस्पताल में एडमिट करवाते है। प्रो. वर्मा अपने परिवार की भाव शून्यता की बदबू और मनुष्यता को लगे कीडेको देखकर उन्हें लगा था- "काश, जितनी मेहनत उन्होंने उसे इंजीनियर बनाने में की थी, उसका शतांश भी उसे अच्छा इंसान बनाने में करते। यही है उनके अंश?"[7] इन सारी बातों से दुखी होकर वह मर्सी- किलिंग का चुनाव करते है। जीवन की आखिरी रात इंजेक्शन देकर वह खत्म करने वाले थे। लेकिन इस आखरी रात में भी उनके पास कोई भी नहीं था, न बेटे और ना ही पत्नी, ना नर्स। "क्या ऐसी मौत चाही थी उन्होंने? प्यार से आकुलकंठ, घर की बनी एक प्याली चाय की अदम्य बेताबी, पेशाब से भीगे कपड़े और ललाट पर रिसता पसीना..... न पोंछनेवाले कोई हाथ.....न आस पास कोई इंसान की आवाज।"[8] डॉक्टर उन्हें जहरीला इंजेक्शन देते हैं। घरवाले रात भर पिता के मृत्यु के खबर की राह देखते है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि सामाजिक विकास के साथ-साथ मधु कांकरिया युगीन पारिवारिक जीवन में भी परिवर्तन दिखाई देता है पारिवारिक जीवन में ढलते चले जा रहे हैं। इनका कथा साहित्य व्यक्ति, परिवार और समाज में व्यापक रूप से व्याप्त आधुनिक संघर्ष और मनोवैज्ञानिक स्थितियों को बड़ी सूक्ष्म सूक्ष्म बताते चित्रित करता है। मधु कांकरिया ने कथा साहित्य में सफल दांपत्य जीवन जीनेवाली नारी का चित्रण किया है। 'दरअसल मम्मी', 'अंत में यीशु', 'दाखिला' आदि कहानियों की कथावस्तु सामाजिक वातावरण की तत्कालिन पारिवारिक जीवन का यथार्थ चित्रण करती है।

संदर्भ :

1) डॉ. राधा गिरधारी, राजेंद्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज, पृ.93

2) डॉ. शशि जेकब, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिता, पृ 104

3)डॉ.मंजू शर्मा,=साठोत्तरी महिला कहानीकार, पृ 52

4) मधु कांकरिया, दरअसल मम्मी,पृ.120

5)मधु कांकरिया, कीड़े,पृ.148

6)मधु कांकरिया, सेज पर संस्कृत, पृ. 46

7)मधु कांकरिया,कीड़े, पृ. ,151

8)वही, पृ. ,154